आगमग्रंथ उवासगदसाओ का हुआ लोकार्पण

आगमग्रंथों में आहुति देना महान श्रुत की सेवा है : आचार्य महाश्रमण

89 वर्षीय मुनि दुलहराज ने किया अनुवाद

सरदारशहर 5 अगस्त, 2010

आचार्य महाश्रमण ने गुरुवार को तेरापंथ भवन में आयोजित एक विशिष्ट कार्यक्रम में 89 वर्षीय आगम मनीषी मुनि दुलहराज द्वारा अनुदित एवं सम्पादित आगम ग्रंथ उवासगदसाओ का लोकार्पण किया। प्राकृत भाषा के इस ग्रंथ के वाचना प्रमुख आचार्य तुलसी एवं प्रधान सम्पादक आचार्य महाप्रज्ञ हैं। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 300 पृष्ठों के इस उवासगदसाओ को पाठकों तक पहुंचाने में अनेक मुनियों का श्रम नियोजित हुआ है।

इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने आगम मनीषी मुनि दुलहराज द्वारा समर्पित आगम ग्रंथ को अनुपम उपहार बताते हुए कहा कि आचार्य तुलसी ने आगम कार्य को बहुत विशाल बताया था। उन्होंने कहा था कि मेरे शासन काल में यह कार्य पूर्ण नहीं होगा। इसकों मेरे उत्तराधिकारी करेंगे और उनके उत्तराधिकारी भी करेंगे। यह कथन आज सत्य हो रहा है। आज भी आगम कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि जो आगम ग्रंथों के सम्पादन एंव अनुवाद के कार्य में आहुति देता है वह महान श्रुत की सेवा करता है। मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी में वैदुष्य है, प्रतिभा है। इन्होंने आगम कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनका इस सन्दर्भ के मुनियों में प्रथम पंक्ति में नाम होगा। इनको आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आगम मनीषी संबोधन प्रदान किया। जो बहुत उपयोगी प्रतीत हो रहा है। वास्तव में मुनिश्री मनीषी है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी आगम कार्य के साथ आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सेवा में भी समर्पित रहे हैं। इस तरह अपने आपको झोंक देना, समर्पित कर देना, बहुत दुर्लभ है। मुनिश्री का स्वास्थ्य और भाग्य आगम का भाग्य बने यह हमारी मंगल कामना है।

आचार्य महाश्रमण ने इस ग्रंथ के सम्पादन में सहयोगी रहे मुनि जितेन्द्रकुमार के कार्यों की सरहाना करते हुए कहा कि मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी ने अपने पीछे आगमकार्यकारी साधु तैयार कर दिया, यह बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि हमें एक युवा संत चाहिए था। इसमें मुनि जितेन्द्र कुमार जुड़ गये। इनमें अच्छी पकड़ है। इन्होंने मुनि दुलहराजजी स्वामी की सेवा में भी अपने आपको समर्पित कर रखा है। जो वृद्ध साधुओं की सेवा करता है वह हमें निश्चिंत बना देता है। मुनि जितेन्द्रकुमार हमारे ओर भी अनेक कार्यों में जुड़े हुए हैं। आचार्य प्रवर ने शासनश्री मुनिश्री राजेन्द्रकुमार के सेवाभाव की सरहाना की। मुनि राजेन्द्रकुमार ने विमोचित ग्रंथ की समीक्षा की है। आचार्य महाश्रमण ने समीक्षा करने वाले एक संत ओर मुनि दिनेश कुमार को गुरुकुल के दीपते संत बताते हुए कहा कि मुनि दिनेशजी बहुत समझदार एवं संघीय भावना रखने वाले संत हैं। इन्होंने आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा की है अब हमारी सेवा कर रहे हैं। उन्होंने शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी की सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इनके द्वारा साहित्य सम्पादन एवं संघीय गतिविधियों में सेवाएं प्राप्त हो रही है।

इससे पूर्व आगम मनीषी मुनि दुलहराज उवासगदसाओं की प्रथम प्रति आचार्य महाश्रमण को समर्पित करते हुए भावुक हो उठे। मुनि राजेन्द्रकुमार ने ग्रंथ के सन्दर्भ में जानकारी प्रस्तुत की। मुनि धनंजयकुमार ने प्रस्तुत ग्रंथ की भूमिका दो आचार्यों द्वारा संयुक्त रूप से लिखे जाने को विशिष्ट संयोग बताते हुए अपने विचार रखे। मुनि जितेन्द्रकुमार ने कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रकाशन सहयोगी पूनमचन्द डागा ने ग्रंथ की प्रति आचार्यवर को भेंट की। विकास बोथरा ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)